लोगों की है कि अंग गले, मुंड हिले, दांत गिरें, बूढ़े हो लाठी ले फिरें, तौ भी तृष्णा नहीं मिटती. और इसी तरह से काल चला जाता है. दिन ऊआ, रात ऊई, महीना ऊआ, बरस ऊआ, बालक ऊआ, बूढ़ा ऊआ, और कुछ नहीं मअलूम कि मैं कौन हूं, और लोग कौन हैं, और कौन किस लिये किसू का सोग करता है. एक आता है, एक जाता है, और अंत काल सब जी जानेवाले हैं; इन में से एक न रहेगा. अनेक अनेक अंग हैं, और अनेक अनेक मन हैं, और अनेक अनेक मोह हैं, भांति भांति के पाखंड ब्रह्मा ने रचे हैं. पर बुद्धिमान इन से बच, आसा और तृष्णा को मार, सिर मुड़ा, हाथ में दंड कमंडल ले, काम क्रोध को मार, योगी हो, नंगे पांव तीर्थ तीर्थ डोलते फिरते हैं, सो मोक्ष पदार्थ पाते हैं. और यह संसार सुपने की तरह है. इस में किस की खुशी कीजिये, और किस का गम. और केले के गाभे की तरह संसार है. इस में सार कुछ नहीं. और धन, जोबन, बिद्या का जो गर्व्व करते हैं, सो अज्ञान हैं. और जो योगी हो, कमंडल हाथ में ले, बार बार भीख मांग, दूध, घी, चीनी से अपने शरीर को पुष्टकर, कामातुर हो, स्त्री से भोग करते हैं, सो अपना योग खोते हैं. इतना पढ़कर वह बोला कि अब मैं तीर्थ यात्रा करूंगा. यह बात सुन, उस के कुटुंब के लोग बहुत खुश हुए.

इतनी कहानी कह, बैताल बोला ऐ राजा! किस कारन वह रोया, और किस कारन हंसा? तब राजा ने कहा

कि बालकपन का मा का प्यार, और जवानी का सुख, याद कर, और इतने दिनों उस देह के रहने के मोह से रोया, और अपनी बिद्या सिद्ध करके, नई काया में पैठके खुशी से हंसा. यह बात सुन, बैताल उसी पेड़ पर जा लटका. फिर राजा उसी तरह से बांध कांधे पर रख ले चला.

तेईसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! धर्मपुर नाम नगर. वहां का धर्मज नाम राजा. उस के शहर में गोविंद नाम ब्राह्मण चारों बेद छहों शास्त्र का जाननेवाला था, और अपने धर्म कर्म से सावधान. और हरिदत्त, सोमदत्त, यज्ञदत्त, ब्रह्मदत्त उस के चार बेटे थे. बड़े पंडित, बड़े चतुर, और अपने बाप की आज्ञा में सदा रहते थे. कितने एक दिन पीछे, बड़ा बेटा उस का मर गया. और वह भी उस के दुख से मरने लगा.

तिस समैं वहां के राजा का पुरोहित बिष्णुशरमा(१) आनकर उसे समझाने लगा कि यह मनुष जिस समैं मा के गर्भ में आता है, पहले वहीं दुख पाता है; दूसरे जवानी में काम के बस हो, प्रीतम के बियोग से ईजा सहता है; चौथे बूढ़ा हो, अपने शरीर के निरबल होने से, अजीयत

(१) विष्णुशर्मा.

में पड़ता है. ग़रज़, संसार में जन्म लेने से दुख बज़ुत होता है और सुख थोड़ा. क्यौं कि यह संसार दुख का मूल है. अगर कोई दरख़त की फुनंग पर जा चढ़े, या पहाड़ की चोटी पर जा बैठे, या पानी में छिप रहे, या लोहे के पिंजरे में घुस रहे, पाताल में जा छिपे, तौ भी काल नहीं छोड़ता. और पंडित, मूर्ख, धनवान, निर्धन, ज्ञानी, अज्ञानी, बलवान, निरबल कैसा ही कोई होवे पर यह सर्वभच्ची काल किसू को नहीं छोड़ता. तमाम सौ बरस की मनुष की आरबल है. तिस में से आधी तो रात में जाती है; और आधी की आधी बाल और वृद्ध अवस्था में; शेष जो रही सो बिबाद, बियोग, सोग में गुज़रती है. और जी जो है, पानी की तरंग की तरह चंचल है. इसे इस मनुष को सुख कहां. और अब कलयुग के समैं, सत्यबादी मनुष मिलने दुर्लभ हैं. और दिन बदिन देश उजड़ते हैं. राजा लोभी होते हैं. पृथवी मंद फल देती है. चोर दुराचारी पृथवी में उपाध करते हैं. और धर्म, तप, सत संसार में थोड़ा रहा है. राजा कुटिल, ब्राह्मण लालची, लोग लुगाई के बस ऊए, स्त्री चंचल ऊई. पिता की निंदा पुत्र करने लगे; और मित्र शत्रुता. और देखो जिस का मामा कन्हैया, और पिता अर्जुन, तिस अभिमन्यु को भी काल ने न छोड़ा. और जिस समैं मनुष को यम ले जाता है, लक्ष्मी उस के घर में रहती है; और मा, बाप, जोरू, लड़का, भाई, बंधु कोई काम नहीं आता. भलाई, बुराई, पाप, पुन्य ही साथ जाता है. और वे ही कुनबे के लोग

उसे, मरघट में ले जा, जला देते हैं. और देखो, इधर रात बितीत होती है; उधर दिन आता है. इधर चांद अस्त होता है; उधर सूरज उदै. ऐसे ही जवानी जाती है; बुढ़ापा आता है. इसी तरह से, काल बीता चला जाता है; पर यह देखकर भी इस मनुष को ज्ञान नहीं होता. और देखो, सत्ययुग में मानधाता(१) ऐसा राजा कि जिस ने, धर्म के यश से, सारी पृथवी को छा दिया था; और त्रेता में श्रीरामचन्द्र राजा, कि जिस ने समुद्र का पुल बांध, लंका सा गढ़ तोड़ रावन को मारा; और द्वापर में युधिष्ठिर ने ऐसा राज किया कि जिस का यश अब तक लोग गाते हैं; पर काल ने उन्हें भी न छोड़ा. और आकाश के उड़नेवाले पंछी, और समुद्र के रहनेवाले जीव, सभैं पाय वे भी आपत्य में आपड़ते हैं. इस संसार में आके, दुख से कोई नहीं छुटा. इस का मोह करना वृथा है. इस से उत्तम यह है, कि धर्म काज कीजिये.

इस तरह से, जब बिष्णुशर्मा ने समझाया, तब उस ब्राह्मण के जी में आया कि अब पुन्य काज कीजिये. यह मन में उस ने सोच, अपने बेटों से कहा कि मैं यज्ञ करने बैठता हूं; तुम समुद्र से, जाकर, कछुआ ले आओ. अपने बाप की आज्ञा पा, एक धीमर से जाकर उन्हों ने कहा कि एक रुपया ले और कच्छप पकड़ दे. उस ने लिया और पकड़ दिया. तब उन में से बड़े भाई ने मझले से कहा तू उठा ले. उस ने छोटे से कहा भाई! तू उठा ले. उस ने

(१) मान्धाता.

कहा कि मैं इसे न छुऊंगा; मेरे हाथ में दुर्गंध आवेगी. और मैं भोजन करने में चतुर हूं. मझला बोला कि मैं नारी रखने में चतुर हूं. बड़े ने कहा कि मैं सेज पर सोने में चतुर हूं.

इस तरह तीनों बिबाद करने लगे; और कछुए को वहीं छोड़, झगड़ते हुए, राजा के द्वार पर जा, द्वारपाल से उन्हों ने कहा कि तीन ब्राह्मण फ़रियादी आये हैं, यह जाके तू राजा से कह. यह सुनके, दरबान ने राजा को ख़बर दी. राजा ने बुलाकर पूछा कि तुम किस वास्ते आपस में झगड़ते हो? तब उन में से छोटा बोला कि महाराज! मैं भोजनचतुर हूं. मझले ने कहा कि पृथवीनाथ! मैं नारीचतुर हूं. बड़े ने कहा कि धर्मावतार! मैं सेजचतुर हूं.

यह सुन राजा ने कहा कि अपनी अपनी परीक्षा दो. इन्हों ने कहा बहुत अच्छा. राजा ने अपने रसोइये को बुलाकर कहा, कि भांति भांति के बिंजन और पकवान बना, इस ब्राह्मण को अच्छी तरह भोजन करवाओ. यह सुन रसोइये ने जा रसोई तैयार कर, उस भोजनचतुर को ले जा, थाल पर बिठाया. चाहे कि वह ग्रास उठा मुख में दे कि इस में दुर्गंध आई. उसे छोड़, हाथ धो, राजा के पास आया. राजा ने पूछा कि तू ने सुख से भोजन किया? तब उस ने कहा महाराज! अन्न में दुर्गंध आई. मैं ने भोजन न किया. फिर राजा ने कहा दुर्गंध का कारन कह. उस ने कहा महाराज! मरघट की भूमि के चांवल

थे; मुरदे की बू उस में से आती थी. इस कारन न खाया.

यह सुनके राजा ने अपने भंडारी को बुलाकर पूछा, अरे! ये किस गांव के चांवल थे. उस ने कहा महाराज! शिवपुर के. राजा ने कहा वहां के किसान को बुलाओ. तब भंडारी ने उस गांव के ज़मीदार को हज़ूर में बुलवाया. राजा ने पूछा, ये किस भूमि के चांवल हैं? उस ने कहा कि महाराज! श्मशान के हैं. यह सुनके राजा ने उस ब्राह्मण के लड़के से कहा, कि तू सच भोजनचतुर है.

फिर नारीचतुर को बुलवा, एक मकान में पलंग बिछवा, सब ख़ुशी के सामान रखवा, एक अच्छी स्त्री को बुलवा, उस के पास रखवा दिया. और वे दोनों आपस में लेटे हुए बातें करने लगे. राजा छिपके झरोखे से देखने लगा. और उस ब्राह्मण ने चाहा कि उस का बोसः ले, इस में उस के मुख की बास पा मुख फेर सो रहा. राजा ने यह चरित्र देख अपने मंदिर में जाकर आराम किया. भोर के समैं उठ, दरबार में आ, उस ब्राह्मण को बुलाके पूछा कि हे ब्राह्मण! आज की रात तू ने सुख से काटी? उस ने कहा महाराज! सुख न पाया. फिर राजा ने कहा किस कारन. ब्राह्मण ने कहा उस के मुंह से बकरी की गंध आती थी. इससे जीव मेरा बहुत बेचैन रहा. यह सुन राजा ने दल्लालः को बुलाकर पूछा, कि इसे तू कहां से लाई थी? और यह कौन है? उस ने कहा यह मेरी बहन की बेटी है. जब तीन महीने की थी, तब इस की

मा मर गई. और मैं ने इसे बकरी का दूध पिला पिला कर पाला है. यह सुन, राजा ने कहा सच तू नारीचतुर है.

फिर सेजचतुर को, अच्छे अच्छे बिछौने करवा, पलंग पर सुलवाया. प्रभात हुए. राजा ने उसे बुलाकर पूछा तू रात भर सुख से सोया? उस ने कहा महाराज! रात भर नींद न आई. राजा ने कहा किस कारन. उस ने कहा महाराज! इस सेज की सातवीं तह में एक बाल है. वह मेरी पिठ में चुभता था. इसे नींद न आइ. यह सुन राजा ने उस बिछौने की सातवीं तह में देखा तो एक बाल निकला. तब उस से कहा कि तू सच सेजचतुर है.

इतनी बात कह, बैताल ने पूछा उन तीनों में कौन अति चतुर है? राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा, जो सेजचतुर है. यह सुन, बैताल फिर उसी दरख़त पर जा लटका. राजा भी वोंहीं जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

चौबीसवीं कहानी.

बैताल ने कहा ऐ राजा! कलिंग देस में एक यज्ञ-शर्मा नाम ब्राह्मण. तिस की स्त्री का नाम सोमदत्ता अति रूपवती थी. वह ब्राह्मण यज्ञ करने लगा. इस में उस स्त्री के एक सुंदर लड़का हुआ. जब वह पांच बरस का हुआ, तब बाप उस का शास्त्र पढ़ाने लगा. बारह

बरस की उमर में वह सब शास्त्र पढ़के बड़ा पंडित हुआ; और सदा अपने बाप की सेवा में रहने लगा.

कितने एक दिन बीते, वह लड़का मर गया. उस के सोग से, माता पिता चिल्ला चिल्ला रोने लगे. यह ख़बर पा, सारे कुनबे के लोग धाये; और उस लड़के को अरथी में बांधकर श्मशान में ले गये; और वहां जा, उसे देख देख, आपस में कहने लगे, देखो मुए पर भी सुंदर लगता है. इसी तरह से बातें करते थे, और चिता चुनते थे, कि वहां एक योगी भी बैठा तपस्या कर रहा था. यह बात सुन, वह अपने जी में बिचारने लगा कि मेरा शरीर अति दृढ़ हुआ. जो इस लड़के के शरीर में पैठूं, तो सुख से योग करूं.

यह सोचकर, उस लड़के के शरीर में पैठ, करवट ले, रामकृष्ण कह ऐसा उठ बैठा, जैसे कोई सोते से उठ बैठे. यह देख, तमाम लोग अचंभे में हो अपने अपने घर आये. और उस के बाप को, यह अचरज देख, बैराग हुआ; पहले हंसा, पीछे रोया.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! कह वह क्यों हंसा, और क्यों रोया. तब राजा ने कहा योगी को इस के शरीर में जाते देख और यह बिद्या सीखकर हंसा; और अपने शरीर के छोड़ने के मोह से रोया, कि एक दिन, इसी तरह, मुझे भी अपना शरीर छोड़ना पड़ेगा. यह सुन बैताल फिर उसी दरख़त पर जा लटका. और राजा भी, पीछे जा उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.